

पाठ—17 भीम और हनुमान

हवा में एक खूबसूरत फूल को देखकर द्रौपदी ने उस फूल को लाने के लिए भीम को कहा।

भीम द्रौपदी की इच्छा पूरी करने हेतु उस फूल की तलाश में निकल गए।

फूल ढूँढते हुए कुरुवंश पुत्र भीम की भेंट वन में बंदर रूपी हनुमान जी से हुई।

हनुमान जी ने भी अपना परिचय दिया और उस परिचय को पाते ही भीम उनके समाने नतमस्तक हो गया ।

भीम के नतमस्तक होते ही हनुमान जी ने आशीर्वाद दिया कि युद्ध के समय मैं तुम्हारे रथ की ध्वजा पर उपस्थित रहूँगा ।